ई.एच.डी.–01

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2015 और जनवरी 2016 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.–01
हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम–1

मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम–01
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.डी.पी./ई.एच.डी.–01/2015–16

प्रिय छात्र/छात्राओ,

विश्वविद्यालय की नयी नीति के अनुसार हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम–1 में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएंगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें। इस पाठ्यक्रम में हिंदी गद्य की विभिन्न विधाओं से आपको परिचित कराया गया है। विधाओं के तत्वों को विस्तारपूर्वक समझाया गया है। आप इस पाठ्यक्रम द्वारा हिंदी की कुछ श्रेष्ठ रचनाओं का रसास्वादन करेंगे तथा यह भी जान सकेंगे कि इन रचनाओं में हमारे समय के यथार्थ की कैसी अभिव्यक्ति हुई है। सत्रीय कार्य से आप ये जाँच सकेंगे कि आपने पाठ्यक्रम में प्रस्तुत इकाइयों को कितना समझा है।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रमों के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।

2. अपनी उत्तर-पुस्तिका के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अपना अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

3. अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और उस अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखिए, जिससे आप संबद्ध हैं।

उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :.....

नाम : .....

पता : .....

.....

दिनांक : .....

पाठ्यक्रम शीर्षक :.....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केंद्र का नाम/कोड : .....

---

4. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज का इस्तेमाल करें और उन कागजों को अच्छी तरह से बाँध लें।

5. प्रत्येक उत्तर से पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6. अपनी लिखावट में उत्तर दें।

7. सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका जाँच के लिए अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक (coordinator) के पास **जुलाई, 2015 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **31 मार्च 2016** और **जनवरी, 2016 सत्र** में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थी अपना सत्रीय कार्य **30 सितम्बर, 2016** तक अवश्य जमा करा दें।

प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें ।

इस सत्रीय कार्य में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं। एक तो दिए गए गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या लिखना तथा दूसरा दिए गए प्रश्नों के निर्धारित शब्दों में उत्तर लिखना। ऐसे प्रश्न दो तरह के हैं। वे प्रश्न जिनके उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखे जाने हैं, और वे प्रश्न जिनके उत्तर 200–250 शब्दों में लिखे जाने हैं। लेकिन इन सभी मामलों में उत्तर आपको अपने शब्दों में लिखना है।

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2 **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,
घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3 **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में ऐच्छिक पाठ्यक्रम–01
सत्रीय कार्य
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : ई.एच.डी.–01
सत्रीय कार्य कोड : ई.एच.डी.–01/टीएमए/2015–16
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 10X3=30

क) इतना जल् इतनी शीतलता! हृदय की प्यास न बुझी। पी सकूँगी? नहीं! तो जैसे वेला से चोट खाकर सिंधु चिल्ला उठता है, उसी के समान रोदन करूँ? या जलते हुए स्वर्ण-गोलक सदृश अनंत जल में डूब कर बूझ जाऊँ?

ख) यह कहो कि वर और पिता दोनों अपराधी हैं, परंतु वर अधिक! बूढ़ा आदमी सोचता है– मुझे तो सारा खर्च संभालता पड़ेगा, कन्या-पक्ष से जितना ऐंठ सकूं, उतना ही अच्छा मगर वर का धर्म है कि यदि वह स्वार्थ के हाथों बिल्कुल बिक नहीं गया है, तो अपने आत्मबल का परिचय दे। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो मैं कहूँगी कि वह लोभी है और कायर भी।

ग) माँ! संतान का पालन माँ-बाप का नैतिक कर्त्तव्य है। वे किसी पर कोई अहसान नहीं करते, केवल राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं। ये ऋण मुक्त हों, यही उनका परितोष है। इससे अधिक मोह है, इसीलिए पाप है, पर मैं क्या करूँ। मैं जो इससे अधिक है, उसी को पाने को आतुर हूँ।

घ) निर्लज्ज! मद्यप!! क्लीव!!! ओह, तो मेरा कोई रक्षक नहीं? (ठहर कर) नहीं, मैं अपनी रक्षा स्वयं करूँगी। मैं उपहार में देने की वस्तु, शीतल-मणि नहीं हूँ। मुझ में रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्म-सम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूँगी।

ङ) मित्र! अपना हाथ बढ़ाओ। यह जीवन और मरण में हमारा सहारा होगा। तुम्हारे द्वारा मेरी भलाई होगी। पर यह नहीं कि सारा ऋण मेरे ही ऊपर रहे, तुम्हारा भी उपकार होगा, जो कुछ तुम करोगे उससे तुम्हारा भी भला होगा। सत्यशील, न्यायी और पराक्रमी बने रहो, क्योंकि यदि तुम चूकोगे तो मैं भी चूकूँगा जहाँ-जहाँ तुम जाओगे, मैं भी जाऊँगा। तुम्हारी बढ़ती होगी तो मेरी भी बढ़ती होगी। जीवन के संग्राम में वीरता के साथ लड़ो क्योंकि तुम्हारी ढाल मैं लिए हूँ।

2 निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15X4=60

क) नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध की विशेषताएँ बताइए।
ख) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में प्रसाद ने किन सामाजिक समस्याओं का उल्लेख किया है? बताइए।
ग) एकांकी नाटक के तत्वों के आधार पर 'कौमुदी महोत्सव' की विशेषताएँ बताइए।
घ) 'निर्मला' उपन्यास की नायिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।
ङ) 'परदा' कहानी की कथावस्तु का विवेचन प्रस्तुत कीजिए।
च) द्विवेदी युगीन हिन्दी गद्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

3 निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5X2=10

क) रेखाचित्र और संस्मरण
ख) 'अकेली' की बुआ
ग) 'निर्मला' की भाषा
घ) 'बातचीत' का शिल्प